

COTTON *Innovate*



Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue 5, Volume 3, March 2017

A weekly newsletter from ICAR-CICR

ICAR-CICR and KVK Nagpur Imparted Training to Karnataka Cotton farmers

A group of 40 cotton farmers from Yadgiri district of Karnataka visited ICAR-CICR and CICR-KVK Nagpur as part of their agricultural education tour under NFSM scheme on 17th March 2017. Dr. R. B. Singandhupe, Programme Coordinator, CICR-KVK welcomed and addressed the farmers. Dr. S. S. Patil introduced the team of scientists to the farmers. The team of scientists from CICR, Nagpur including Dr. K P Raghavendra (Biotechnology), Dr. H. B. Santosh (Plant Breeding), Dr. Savitha Santosh (Microbiology), Dr. Neelakanth S. Hiremani (Plant Pathology), Dr. Vivek Shah (Entomology), Mr. Prabhulinga, T. (Entomology), Mr. Madhu, T. N. (Entomology) and Dr. Pooja Verma (Plant Biochemistry) interacted with the farmers. Dr. K. P. Raghavendra explained the concept of Bt technology to the farmers and educated them about its importance and safety by responding to their queries. Dr. H. B. Santosh explained the farmers about advantages of varieties over Bt-hybrids and emphasized the role of high density planting system and early maturity in achieving higher yields using less inputs, time and management. He also highlighted the importance of Bt-varieties in the coming years. Dr. Savitha Santosh explained about the use of biological control agents like Trichoderma and Pseudomonas in effective pest and disease management in cotton. Dr. Neelakanth S. Hiremani addressed



the farmers' queries on diseases of cotton and their management. Mr. Prabhulinga, T. explained about the pest management aspects of cotton and drew the attention of farmers towards the management of cotton sucking pests and Spodoptera. He also suggested the use of poison bait for the management of Spodoptera at early stage of the crop. Dr. Vivek Shah highlighted the incidence and management of pink bollworm. Mr. Madhu, T. N. explained about the judicious use of insecticides. He alerted the farmers against the use of mixture and high dose of insecticides. Dr. Pooja Verma participated and facilitated the tissue culture laboratory visit. Shri. Basavaraja, representative of farmers group expressed gratitude to ICAR-CICR and CICR-KVK for making their visit most fruitful and educating.



Dr O.P. Tuteja, Principal Scientist (Crop Improvement), Dr. Rishi Kumar, Principal Scientist (Entomology) and Dr Satish KSain, Sr Scientists (PI Pathology) visited MGMG village Rangari, Begu and Jhopra to discuss the sowing plan with the farmers of these adopted villages on 24.03.2017

News Paper Coverage

कपास अनुसंधान और उत्पादन को बढ़ावा दे रहा है सिरसा का केंद्र

अमर उजाला व्यूरो सिरसा।

सिरसा स्थित केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र कपास उत्पादन को बढ़ावा देने में जुटा है। केंद्र के वैज्ञानिक न केवल अधिक उत्पादन देने वाली फसलें ईजाद कर रहे हैं, बल्कि भयंकर बीमारियों की रोकथाम के लिए खोज भी कर रहे हैं। वैज्ञानिक उत्तर भारत की जलवायु के अनुरूप किस्में तैयार कर रहे हैं, जिससे किसानों को लागत कम लगे और पैदावार उम्दा हो।

सिरसा उत्तर भारत में कपास के उत्पादन में अहम योगदान दे रहा है। इसी कारण उत्तर भारत में केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र की स्थापना सिरसा में की गई है। केंद्र से हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के कपास उत्पादन वाले क्षेत्रों को कवर किया जाता है। हर वर्ष कपास की बीटी किस्मों की गुणवत्ता जांची जाती है। सभी किस्मों के प्लॉट यहां लगाए जाते हैं, ताकि उनमें आने वाली बीमारियों

और गुणवत्ता का अध्ययन किया जा सके। बता दें कि सिरसा का देश में पाँच प्रतिशत और राज्य में 40 प्रतिशत कपास के उत्पादन में योगदान है। केंद्र की ओर से किसानों को बीज बनाने के लिए प्रशिक्षित भी किया जाता है।

केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. दलीप मोंगा ने बताया कि सफेद मक्खी और पत्ता मरोड़ बीमारी की रोकथाम पर शोध किया जा रहा है। कुछ सावधानियां बरत कर कपास की फसल को इन बीमारियों से बचाया जा सकता है। ऐसी किस्मों की बिजाई की जाए जिनमें ये बीमारियां कम आती हैं। सीआईसीआर का मुख्य उद्देश्य कपास का उत्पादन बढ़ावा, गुणवत्ता में सुधार लाना और फसल पर आने वाले खर्च को कम करना है। इसके लिए नई किस्में तैयार करना, नए शंकर बनाना, बीटी को टेस्ट करना, कपास बीज बनाने की तकनीक किसानों को बताना और फसलों को रोगों से बचाना जैसे कार्य केंद्र पर किए जाते हैं।

ये किस्में की ईजाद

केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र ने सीआईसीआर-1 (देसी), सीआईसीआर-3, सीआईसीआर-2 (शंकर) किस्मों ईजाद की हैं। अमेरिकन कपास में सीएसएच-3129 ईजाद की है, जो उत्तर भारत में गुणवत्ता के मामले में नंबर वन है। इस बार 100 एकड़ में इस बीज के प्रदर्शन प्लॉट लगाए जाएंगे। अमेरिकन कपास की सीएसएच-3075 नई किस्म ईजाद की है। इस किस्म के 200 एकड़ में प्रदर्शन प्लॉट लगाए जाएंगे।

सघन खेती अपनाकर बढ़ाएं उत्पादन

डॉ. दलीप मोंगा ने बताया कि सघन खेती तकनीक से कपास का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। इस विधि से एक एकड़ में 60000 पौधे लगाए जा सकते हैं, जबकि बीटी की बिजाई में आठ हजार पौधे प्रति एकड़ में होते हैं। यह विलकुल नई तकनीक है। इससे उत्पादन अधिक होता है।

मोहित धुपड़
अंबाला सिटी।

प्रदेश में ज्वार (चारे वाली फसल) खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने खास योजना तैयार की सरकार चाहती है कि किसान ज्वार खेती करके आमदनी तो बढ़ाएं ही हो पशुओं के लिए चारे का संकट हो। ज्वार की खेती जैसे तो आंध्र कर्नाटक और मध्यप्रदेश में ज्यादा होती है, लेकिन हरियाणा, राज तमिलनाडु और उतर प्रदेश में भी खेती होती है। प्रदेश में पशुओं के लिए किसान ज्वार की खेती व इस कारण इसका रकबा काफी पिछले कुछ साल के आँ नजर डालें तो ज्वार की खेती हरियाणा के किसानों का रुझान वर्ष 2010-11 में हरियाणा में खेती का रकबा 71 हजार है वर्ष 2011-12 में रकबा कम हजार हेक्टेयर रह गया। वर्ष 2 में रकबा घटकर 55 हजार है



Produced and Published by:

Chief Editor :

Digital Editor, design & Media Support :

Editors:

Dr. M. S. Ladaniya, Director, CICR, Nagpur

Dr. S. M. Wasnik

Dr. M. Sabesh

Dr. J Annie Sheeba, Dr. Vishlesh Nagrare,

Dr. J Amutha, Dr. M Saravanan

Publication Note: This Newsletter presented online at

http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html

Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by

ICAR-Central Institute for Cotton Research

Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010

Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;

email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in

Citation : Cotton Innovate, Issue-5, Volume-3, 2017,
ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.